महात्मा बसवेश्वरा के सम्मान में स्मारक सिक्का जारी करने के अवसर पर प्रधानमंत्री जी का भाषण

दिनांक 23 जून, 2006
बंगलौर

आज मुझे एक महान रहस्यवादी और समाज सुधारक महात्मा बसवेश्वरा के सम्मान में एक सिक्का जारी करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। हमारे समाज सुधार के इतिहास में महात्मा बसवेश्वरा एक असाधारण व्यक्तित्व के रूप में खड़े नज़र आते हैं। लौकिक शक्ति संपन्न होने के साथ-साथ आध्यात्मिक प्रवृत्ति की तरफ भी उनका ध्यान था। उन्होंने कर्मकाण्ड और सामाजिक कट्टरवादिता के खिलाफ लड़ाई लड़ी तथा अधिक मानवीय सामाजिक व्यवस्था के लिए प्रयासरत रहे। उन्होंने छुआछूत के विरूद्ध शंखनाद किया और वर्ग-विहीन और जाति विहीन समाज की स्थापना के लिए कार्य किया। यह उनके प्रति हमारी श्रद्धा और गहन सम्मान ही है कि आज हम सब यहां एकत्र हुए हैं।

महात्मा बसवेश्वरा भारत के एक महान सपूत थे और कर्नाटक के एक महान आध्यात्मिक नेता थे। उन्होंने सभी जातियों के लोगों को अपना अनुयायी बनाया और मनुष्य की समानता पर जोर दिया। उनकी धार्मिक अकादमी, अनुभव मण्डप सामाजिक लोकतंत्र का एक सशक्त उदाहरण था। इसका दायरा धार्मिक क्षेत्र से भी आगे था। यह लोगों की चेतना की जागृति के प्रति समर्पित था।

देवियो और सज्जनो,

महात्मा बसवेश्वरा एक ऐसे आध्यात्मिक नेता और व्यावहारिक, दूरदर्शी एवं कल्पनाशील व्यक्ति थे जो यह मानते थे कि कर्म ही धर्म है। उन्होंने अपने एक स्त्रोत में आध्यात्मिकता के क्षेत्र में परिपूर्णता प्राप्त करने के लिए श्रम के महत्व पर बल दिया है। वे जन्म के आधार पर मनुष्य की श्रेष्ठता को नकारते हुए हर व्यक्ति की अपनी योग्यता और श्रम की गरिमा में विश्वास रखते थे।

महात्मा गांधी द्वारा हमें मानवीय श्रम की गरिमा का महत्व बताए जाने से बहुत पहले महात्मा बसवेश्वरा ने इसका महत्व रेखांकित किया था और इसे सम्मान दिया था। उन्होंने घोषित किया कि राज्य के सभी सदस्य श्रमिक होते हैं उनमें से कुछ बौद्धिक श्रमिक हो सकते हैं और कुछ शारीरिक श्रम करने वाले हो सकते हैं। उन्होंने विभिन्न व्यवसायों के संबंध में बहुत सी समितियां स्थापित की और उन व्यवसायों से जुड़े लोगों को यथोचित प्रतिनिधित्व दिया। मानवीय श्रम से जुड़े लोगों के उद्देश्यों के समर्थन का यह एक अनूठा तरीका था। 12वीं सदी में मानवीय श्रम के लिए उनके समर्थन से हस्तकलाएं समृद्ध हुई और कारीगरों का भला हुआ।

एक मुख्यमंत्री के रूप में उन्होंने सार्वजनिक जीवन में नैतिकता का स्तर बढ़ाने के लिए बड़ी मेहनत की। वे प्रशासकों से चाहते थे कि वे अपने कर्तव्यों के निर्वहन में अनुकरणीय आचरण का प्रदर्शन करें। मैं मानता हूं कि बसवेश्वरा का संदेश आज भी समाज में गूंज रहा है और उसका आज भी हमारे लिए महत्व है। हमारे सार्वजनिक जीवन में मूल्यों का निरंतर ह्रास हुआ है। मैं समझता हूं कि सार्वजनिक जीवन में लोगों के व्यवहार के मानक निश्चित रूप से बेहतर हो सकते हैं। यदि हम सभी सार्वजनिक जीवन में बसवेश्वरा की ईमानदारी और सत्यता के उदाहरण का अनुसरण करें तो इस बढ़ती हुई नैतिक और सामाजिक समस्या का प्रभावी ढंग से हल ढूंढ़ा जा सकता है।

देवियो और सज्जनो,

महात्मा जी के जीवन का एक असाधारण पहलू आम व्यक्ति के प्रति उनका सम्मान का भाव था। मध्यकाल में उन्होंने आम आदमी के प्रति जिस तरह का सम्मान का भाव प्रदर्शित किया उसे समकालीन समाज केवल आधुनिक और उदार लोकतंत्रों के साथ जोड़ते हैं। इस मायने में वे अपने समय से बहुत आगे थे। आम आदमी द्वारा किए जाने वाले काम के महत्व और उसके मूल्य को समझाने के लिए वे कहा करते थे, ''गाय उसे दूध नहीं देती जो उसकी पीठ पर बैठा हो, बल्कि वह उसे दूध देती है जो उसके चरणों में बैठा हो।'' लोकतंत्र और विकास आम आदमी और खासकर गरीब के लिए तभी सार्थक हो सकता है जब उन्हें अधिकार-संपन्न बनाया जाए।

बसवेश्वरा ने एक और महत्वपूर्ण उद्देश्य का समर्थन किया और वह था समाज में महिलाओं की स्थिति। आधुनिक समाजों द्वारा लैंगिक समानता के उद्देश्य का समर्थन किए जाने से बहुत पहले महात्मा बसवेश्वरा ने यह काम किया। हमारे समय के प्रशासकों और सार्वजनिक जीवन से जुड़े सभी व्यक्तियों को महात्मा जी की वे शिक्षाएं अवश्य ध्यान में रखनी चाहिए कि हर स्त्री और पुरूष के साथ समानता का व्यवहार किया जाए चाहे वह किसी भी धर्म में आस्था रखता हो।

देवियो और सज्जनो,

यह स्मारक सिक्का महात्मा बसवेश्वरा के जीवन और उनके संदेश के प्रति हमारे प्रेम, श्रद्धा और सम्मान का केवल एक छोटा सा प्रतीक है। मुझे उम्मीद है कि उनके जीवन और उनके कार्यों का यह सार्वजनिक सम्मान भावी पीढ़ियों को प्रेरणा देता रहेगा। हमारे इस महान लोकतंत्र में हर नागरिक को यह अधिकार है कि वह गरिमा और आत्म-सम्मान का जीवन जी सके। ऐसे महान संत और नेता की स्मृति में इस सिक्के को जारी करने के काम से जुड़े लोग प्रशंसा के पात्र हैं।

****